कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, मई 2024 | वर्ष 2, अंक 9, पृष्ठ 4

खुशी कैन प्रथम और दक्षिता गुलिया ने द्वितीय पुरस्कार

योगेश प्रताप

- ओपन माइक प्रतियोगिता में रजनीश शुक्ला को मिला तीसरा स्थान
- आरएलए की आरोह समिति ने शहीद दिवस पर आयोजन कराया

नई दिल्ली। आरोह समिति का उद्देश्य केवल वाद विवाद नहीं बल्कि समाज का समग्र विकास भी है। यह एक ऐसा मंच है, जिससे आप समूचे विश्व से जुड़ सकते हैं। यह कहना है आरोह वाद विवाद समिति के सह–संयोजक डॉ. राजेश गौतम का। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय की वाद विवाद समिति आरोह ने 21 मार्च को शहीद दिवस के अवसर पर ओपन माइक प्रतियोगिता का आयोजन करवाया, जो महाविद्यालय के सेमिनार हाल में दीप प्रज्ज्वलन के साथ शुरू हुआ। यह प्रतियोगिता अंतर–महाविद्यालयीय थी, जिसमें लगभग 45 छात्र–छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

इस ओपन माइक प्रतियोगिता में कुछ प्रतिभागियों ने स्वरचित कविता और भाषण का प्रदर्शन किया तो कुछ ने दूसरों की काव्य रचनाओं को प्रस्तुत किया। प्रतिभागी केतन मिश्र ने अपनी वीर रस की कविता से सेमिनार हाल में एक नई किस्म की ऊर्जा का संचार किया, जिसके बोल थे ''मन की छाती पर चढ़कर, जय जय हिंदुस्तान करूंगा...''। वहीं विजेता रही खुशी कैन ने ''है कलम मेरी कहती मुझसे, कुछ तो वीरों के नाम लिखूं।'' ने दर्शकों में जोश भरने का काम किया।

डॉ. राजेश गौतम ने कहा जिन प्रतिभागियों ने अपनी स्वरचित प्रस्तुति दी है वह काबिलेतारीफ है, पर जो प्रतिभागी किसी दूसरे की रचना को प्रस्तुत कर रहे हैं उन्हें कम से कम कविता या रचना याद रहनी चाहिए, क्योंकि कई प्रतिभागी कागज या मोबाइल में देखकर कविता का पाठ कर रहे थे।

प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार शहीद राजगुरु कॉलेज की खुशी कैन, द्वितीय पुरस्कार स्टेट इंस्टिट्यूट फॉर एडवांस्ड स्टडीस इन टीचर एजूकेशन झज्जर की दक्षिता गुलिया और तृतीय पुरस्कार पीजीडीएवी सांध्य के रजनीश शुक्ला को मिला। सभी विजेताओं को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में निर्णायक मंडली के रूप हिंदी विभाग के शिक्षक के डॉ. रोशनलाल मीणा, डॉ. एनी रे, डॉ. साधना और डॉ. जतिन मौजूद रहे।

अंत में उप–प्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास ने प्रतिभागियों से बातचीत की और उन्हें प्रोत्साहित भी किया। उन्होंने समिति के बारे में अपने विचार साझा किए तथा समिति को शुभकामनाएं दीं। समिति अध्यक्षा खुशी वशिष्ठ ने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी का आभार जताया। संचालक की भूमिका समिति के सदस्य आयुष, अर्णव और ऋतिका ने निभाई।



राम लाल आनंद महाविद्यालय के एनसीसी के वार्षिक समारोह 'विक्रान्त' में एडीजी मेजर जनरल एसपी विश्वास व प्राचार्य ने कैडेट को सम्मानित किया।

समाज सेवा से भारत विकसित राष्ट्र बनेगा

उत्कर्ष

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री से लेकर राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के प्राचार्य तक सभी की भूमिका होती है कि देश और समाज को कहां तक ले जाना है। महाविद्यालय को कहां तक ले जाना है। इसके लिए सपना देखना होता है। सपने के साथ योजना बनानी होती है। उसके लिए मूल्य और नैतिकता तय करनी होती है। यह बात मुख्य अतिथि के रूप में एनसीसी डायरेक्टर दिल्ली के एडीजी मेजर जनरल एसपी विश्वास राव ने राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के वार्षिक समारोह में कही।

विक्रान्त 24 के नाम से आयोजित समारोह में मेजर जनरल एसपी विश्वास राव ने कहा कि एनसीसी के तीन मिशन होते हैं। पहला–युवाओं के चरित्र का निर्माण करना। दूसरा है देश और समाज की सेवा करना। तीसरा मिशन है–सेना में युवाओं की भर्ती के लिए माहौल बनाना। उन्होंने कहा कि इस समय देश में 15 लाख कैडेट हैं। अगले पांच साल में 18 लाख हो जाएंगे। एडीजी ने कैडेट्स को सलाह देते हुए कहा कि आप सभी को अनुशासन का प्रसार करना होगा। आप यात्राएं करने में हमेशा यूनीफार्म में रहें। भारतीयता से लगाव व प्रेम करिए। सद्भावना के लिए काम करिए। ऐसा करने अथवा ऐसा करने की मुहिम चलाकर ही भारत विकसित बनाया जा सकेगा।

एनसीसी के वार्षिकोत्सव में कई प्रतियोगिताएं भी हुईं। इसमें कई महाविद्यालयों ने हिस्सा लिया। इसमें ग्रुप डांस में जेडीएमसी और सत्यवती महाविद्यालय की टीम ने संयुक्त रूप से बाजी मारी। उसे विजेता ट्राफी से नवाजा गया।

वालीबाल में एसजीटीबी खालसा को प्रथम और आर्यभट्ट महाविद्यालय की टीम को दूसरा पुरस्कार मिला। क्विज में अभिषेक तिवारी और कनिष्का जोशी ने बाजी मारी। बेस्ट कैडेट का तमगा देवाशीष और जान्हवी को मिला।

विशिष्ट अतिथि के रूप में एनसीसी ग्रुप सी के ग्रुप कमांडर ग्रुप कैप्टन के.डी. दीपक, 7 दिल्ली बटालियन के कमांडिंग आफीसर कर्नल वीके उप्रेती, एडमिनिस्ट्रेटिव आफीसर लेफ्टिनेंट कर्नल अनुभव तनेजा और महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने विजेताओं और कैडेट्स को सम्मानित किया।

जेडीएमसी कॉलेज की प्रस्तुति में कैडेट्स ने संदेश दिया कि बेटियां बोझ नहीं, भवानी हैं। वे पूजनीय हैं। इसी तरह सत्यवती कॉलेज की टीम का पहाड़ी नृत्य मोहक था। वहीं हंसराज कॉलेज के कैडेट शुभम के भाषण ने लोगों का दिल जीत लिया। उसे पुरस्कार भी मिला। अंत में दिल्ली विवि के एनसीसी अधिकारी व महाविद्यालय के प्रो. (मेजर) संजय कुमार शर्मा ने अपनी काव्यात्मक शैली और जोशीले अंदाज में सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। साथ ही वार्षिकोत्सव के लिए बीते एक सप्ताह से दिन–रात एक करने वाले सभी कैडेट्स की मेहनत को रेखांकित किया। साथ ही कहा कि जिस एकजुटता से आप लोगों ने यह समारोह किया है। पूरे आयोजन में रैंक पैनल के एसयूओ अक्षित कटोच, जेयूओ अभिजीत भनवाला, चिराग शौकीन और अंशुल शर्मा की विशेष भूमिका रही।

इस मौके पर महाविद्यालय के उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास, प्रो. प्रदीप शर्मा, डॉ. कुलदीप कुमार, डॉ. रोशनलाल मीणा, डॉ. विशाल कुमार सहित अनेक शिक्षक और बड़ी संख्या में कैडेट्स मौजूद थे।

अस्मि ने दिया लैंगिक समानता का संदेश

लक्ष्मी

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की जेंडर सेंसटाइजेशन समिति अस्मि ने रंगोली और रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता कराया। कार्यक्रम को दो सत्र में विभाजित किया गया। पहले सत्र में रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता हुई। जेंडर इन एवरींडे लाइफ रचनात्मक लेखन का विषय था। सभीं को बताया गया कि अपने विषय पर ही लिखेंगे, पर आप उद्देश्य अपने हिसाब से तय कर सकेंगे।

दूसरे सत्र में रंगोली प्रतियोगिता हुई। जेंडर इक्विलिटी प्रतियोगिता की थीम रखी गई थी। राजनीतिक विज्ञान की प्रथम वर्ष की हिमानी, आस्था, रीतिका और रितेश ने रंगोली प्रतियोगिता में जीत हासिल की। समिति संयोजिका प्रो. श्रुति आनंद के निर्देशन से प्रतियोगिता हुई। अध्यक्ष प्रभाकर मल्ल की भी अहम भूमिका रही।

व्यक्तिगत विकास से ही देश का विकास होगा

खुशी

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की कॉमर्स समिति का–चिंग ने अपने वार्षिकोत्सव ज्यूस 3.0 के पहले दिन 2 अप्रैल को बिजनेस कॉन्क्लेव आयोजित किया। इस विमर्श का विषय रोडमैपिंग इंडिया जर्नी टुवर्ड्स अचीविंग विकसित भारत 2047 रखा गया। सीए अर्चित अग्रवाल, रघुवीर नाथ और अतुल कुलश्रेष्ठा इस विमर्श के मुख्य वक्ता थे।

बिजनेस कॉन्क्लेव की शुरुआत मंच संचालन कर रहे विद्यार्थी देव अरोरा के प्रश्न '2047 तक विकसित भारत बनने के सपने को लेकर विशेषज्ञों का क्या दृष्टिकोण है' से हुई। जवाब में रघुवीर नाथ ने बताया कि हम भूल जाते हैं कि हमारा इतिहास क्या है, हम भूल जाते हैं कि हमारा इतिहास कितना पुराना है। भारत की जीडीपी 17वीं ईसवी में 25 प्रतिशत थी, जो



कॉमर्स समिति के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ताओं ने रखे विचार।

सन 1947 में लगभग 2.3 प्रतिशत थी। इसलिए यह कहना बिल्कुल गलत नहीं होगा कि भारत अगले 23 वर्षों में अपनी 20 प्रतिशत जीडीपी बढ़ा लेगा। उन्होंने यह भी बताया कि हमारा लक्ष्य सिर्फ खुद के लिए पैसे कमाना नहीं होना चाहिए बल्कि खुद को एक बेहतर इंसान बनना भी होना चाहिए। अपने आसपास के लोगों के प्रति और समाज में अच्छा व्यवहार होना भी जरूरी है।

'भारत को विकसित भारत बनाने में विद्यार्थियों का क्या योगदान होना चाहिए' जैसे सवाल पर अतुल कुलश्रेष्ठा का कहना था कि बाकी देशों में विद्यार्थी पढ़ाई के साथ पार्ट टाइम नौकरी भी करते हैं। अतिरिक्त पैसे कमाने के लिए। एक बार जब आप स्वतंत्र जीने लग जाते हैं तो चुनौती भरी परिस्थितियों को अपने कौशल के साथ निपटने लगते हैं। तब आप जीडीपी में अपना योगदान देने लग जाते हैं। दूसरे वक्ता अर्चित अग्रवाल का कहना था कि सिर्फ

- भारत जल्द ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी जीडीपी वाला देश बनेगा
- सिर्फ डिग्री नहीं विद्यार्थियों को अपने कौशल पर भी ध्यान देने की जरूरत है

डिग्री लेना ही नहीं बल्कि आपको अपने कौशल को भी विकसित करना होगा। तभी आप विकसित भारत में योगदान दे पाएंगे। रघुवीर नाथ का कहना था कि विद्यार्थियों को पहले व्यक्तिगत रूप से विकसित होना जरूरी है। तभी विकसित भारत की कल्पना करना संभव है।

विद्यार्थियों ने जिज्ञासा दिखाते हुए कुछ प्रश्न भी किए, जिसका जवाब मुख्य वक्ताओं ने दिया। समारोह में प्रभारी शिक्षिका डॉ. रितु वत्स और डॉ. शिखा सिंह मौजूद थीं। समिति संयोजिका डॉ. नूपुर साबू ने सभी का आभार व्यक्त किया।

औद्योगीकरण की ओर बढ़ते कदम

जया सिंह

नई दिल्ली। इनोवेशन वास्तव में कुछ ऐसा बनाने से है, जिसकी लोगों को आवश्यकता हो। एक इनोवेटिव व्यक्ति बनने के लिए आपको अपनी खुद की क्षमताओं का ज्ञान होना जरूरी है। समाज और आपके जीवन में स्थिरता अचानक नहीं आ सकती। आपको उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना होगा। यह बात गत 9 अप्रैल को राम लाल आंनद महाविद्यालय की मैनेजमेंट सोसाइटी मार्ग की ओर से आयोजित कार्यक्रम नीति 2 में मुख्य वक्ताओं ने कही।

कार्यक्रम का विषय था–नवाचार और स्थिरता। मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद थे लेखक अंशुमाली सक्सेना, निवेश बैंकिंग की संस्थापक वंदना तोलानी, उद्यमी मृदु जैन और पायल सिंह। यह एक नेतृत्व शिखर सम्मेलन था। कार्यक्रम में समिति की संयोजक सुश्री प्रियंका जैन भी मौजूद थीं।

पत्रकारिता और समय के तालमेल को समझना होगा

राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का ईन्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' अपनी पहचान बनाता जा रहा है। अब तक इसके आठ अंक निकल चुके थे। इसमें हमारे वरिष्ठ और समकक्ष सहपाठियों ने अच्छा काम किया। इसी कड़ी में नौवें अंक के संपादन की जिम्मेदारी हमें मिली। अंक का संपादन करते हुए कई समस्याएं भी आईं, लेकिन डॉ. अटल तिवारी सर के मार्गदर्शन से मैने इस जिम्मेदारी को पूरा किया। सर ने बताया कि यदि हम किसी काम को मनोरंजक बनाकर करें तो उसमें मजा आने लगता है। उन्होंने बताया कि कोई भी कार्य हमें तब बोझ लगता है जब हम उसको बोझ समझने लगते हैं। 'कैम्पस कनेक्ट' की जिम्मेदारी लेने के साथ मैंने काम की शुरुआत की। इस जिम्मेदारी को निभाते हुए ऐसा कुछ नहीं लगा, जो किया नहीं जा सकता।



दीपक कुमार

इसमें सबसे बड़ी बात यह समझ में आई कि समय सीमा के अंदर काम करना कितना जरूरी है, क्योंकि सारा खेल समय का होता है। पेज डिजाइन का काम क्वार्क एक्सप्रेस सॉफ्टवेयर पर किया। इस पर काम करते समय बहुत कुछ समझने को मिला। जिन चीजों में दिक्कत आई वह साथियों से बात करके दूर किया। उन सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों को शुक्रिया कहना चाहूंगा, जिनका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग रहा है।

आनन्द स्वरूप को प्रकाशन संस्थान का अनुवाद सम्मान

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। प्रख्यात अनुवादक, संपादक और लेखक आनन्द स्वरूप वर्मा को प्रकाशन संस्थान अनुवाद सम्मान 2023 से नवाजा गया। प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में आयोजित समारोह में उन्हें सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आनन्द स्वरूप वर्मा की अनुवाद प्रक्रिया और उनके रचनाकर्म पर अनुवादक और जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. देवशंकर नवीन ने मुख्य वक्तव्य दिया। सम्मानित लेखक ने भी अपने विचार रखे। प्रकाशन संस्थान ने सम्मान देने के लिए जो निर्णायक मंडल बनाया था, उसमें कवियत्री अनामिका, मदन कश्यप और रवीन्द्र त्रिपाठी शामिल थे।



आनन्द स्वरूप वर्मा ने अंग्रेजी से हिंदी में करीब दो दर्जन पुस्तकों का अनुवाद किया है। इनमें से प्रमुख हैं–आज का भारत (रजनी पाम दत्त), भारतीय जेलों में पांच साल (मेरी टाइलर), प्राचीन भारत में राजनीतिक हिंसा (उपिंदर सिंह), भारत में बंधुआ मजदूर (महाश्वेता देवी)। आनन्द स्वरूप वर्मा की उच्च शिक्षा गोरखपुर में हुई। उन्होंने कहानी लेखन से शुरुआत की, पर अपनी पहचान पत्रकारिता से बनाई। उन्होंने 1966 से पत्रकारिता की शुरुआत की थी। करीब चार साल वह आकाशवाणी के समाचार सेवा प्रभाग में नौकरी भी की। इसके बाद वह स्वतंत्र लेखन की तरफ मुड़ गए। 1980 में उन्होंने 'समकालीन तीसरी दुनिया' नामक मासिक पत्रिका का शुभारंभ किया। देखते ही देखते यह पत्रिका अपने नाम के मुताबिक तीसरी दुनिया से जुड़ी विशेष सामग्री के प्रकाशन के लिए पहचानी जाने लगी।

आनन्द स्वरूप वर्मा की खासियत यह है कि उन्होंने अपने विचारों से कभी समझौता नहीं किया। उनकी रक्षा के लिए वह हर तरह के संकट सहने के लिए तैयार रहे। यही कारण है कि बिना किसी सांस्थानिक सहायता के उन्होंने पत्रिका की शुरुआत की। कई व्यवधानों के बाद भी वह उसका सम्पादन और प्रकाशन करते रहे। इसके माध्यम से वह दुनिया के कई देशों में चल रहे आंदोलनों से भी जुड़े। एक तरह से उनका लेखन संघर्षशील आमजन के करीब रहा।

बताया जाता है कि 1990 में उनकी पहली किताब 'गोरे आतंक के खिलाफ काली चेतना' प्रकाशित हुई। यह किताब दक्षिण अफ्रीका में चल रहे रंगभेद विरोधी आंदोलन पर केन्द्रित थी। इसी दौरान आनन्द स्वरूप ने दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की और आंदोलन में शामिल लोगों से बातचीत कर कलम चलाई। कहा जाता है कि हिंदी जगत को नेल्सन मंडेला और उनके कामकाज से परिचित कराने का महती काम आनन्द जी ने किया। वहां जाकर वहां होने वाले पहले लोकतांत्रिक चुनावों की रिपोर्टिंग करने के साथ कई अफ्रीकी नेताओं के साक्षात्कार लिए। आनन्द स्वरूप वर्मा ने केन्या, जिम्बाब्वे सहित नाइजीरिया और घाना की यात्रा की। लोकतंत्र के विकास में नाइजीरिया के बुद्धिजीवियों की भूमिका विषय पर अध्ययन भी किया। वह नेपाल और भूटान के भी विशेषज्ञ माने जाते हैं। नेपाल में 1990 में हुए पहले बहुदलीय चुनाव के अवसर पर 'लोकतंत्र की सुबह' (Dawn of Democracy) नामक वृत्तचित्र का निर्माण किया। इसी कड़ी में 2008 में नेपाल के माओवादी आंदोलन पर 'बर्फ की लपटें' (Flames of the snow) का निर्माण किया। भारत से दूसरे देशों को गए कई प्रतिनिधि मंडलों का उन्होंने नेतृत्व किया। आनन्द स्वरूप वर्मा अनुवाद में उन्हीं पुस्तकों का चयन करते हैं, जो उनकी वैचारिक लाइन सहित गुणवत्ता की दृष्टि से महत्वपूर्ण होती हैं। इन शर्तों पर खरी न उतरने वाली किताबों को अनुवाद करने से वह साफ मना कर देते हैं, भले उसके लिए उन्हें पैसा चाहे जितना अधिक मिल रहा हो। उनके अनुवाद की अधिकांश किताबें प्रकाशन संस्थान ने प्रकाशित की हैं। इसमें सबसे अधिक दक्षिण अफ्रीका से संबंधित हैं।

खेल पत्रकारिता में युवाओं के लिए अवसर

सर, सबसे पहले रेडियो तरंग के श्रोताओं को यह बताइए कि खेल पत्रकारिता क्या होती है?

खेल पत्रकारिता एक ऐसी विधा है, जिसमें जो पत्रकार हैं वो खेल के आयोजनों के बारे में लोगों को जानकारी देते हैं। वह जानकारी समाचार पत्र में प्रतियोगिता खत्म होने के बाद भी हो सकती है। उससे पहले प्रिव्यू के फॉर्म में भी हो सकती है। वह समाचार पत्रों में भी हो सकती है। वह पत्रिका में भी हो सकती है। वह रेडियो और टेलीविजन में भी हो सकती है। इस तरह से आप चाहें तो खेल पत्रकारिता को 2 हिस्सों में बांट सकते हैं। एक प्रिंट के माध्यम से और एक इलेक्ट्रानिक माध्यम से। इसी के साथ तीसरा जुड़ गया है डिजिटल प्लेटफॉर्म। डिजिटल प्लेटफॉर्म में आप यूट्यूब पर वीडियोज बना सकते हैं। जानकारी में आप मैचों को एनालाइज कर सकते हैं। मैचों का प्रिव्यू कर सकते हैं। तीन प्लेटफॉर्म में बांट सकते हैं प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और डिजिटल मीडिया। इस तरह जो व्यक्ति इन तीनों प्लेटफॉर्म पर खेल से संबंधित जानकारी देता है उसे खेल पत्रकारिता बोलते हैं।

खेल पत्रकारिता में ओवरऑल तो सारे खेल आते हैं। अगर एक स्पेसिफिक खेल में कोई व्यक्ति खुद को विश्लेषक बनाना चाहता है तो उसे किन स्किल्स पर काम करना चाहिए?

देखिए, किसी भी खेल पत्रकार के पास कुछ क्वालिटी होनी चाहिए या उसको वह क्वालिटी डेवलप करनी है। अगर आप प्रिंट में जा रहे हैं तो आपके पास अच्छी लेखनी होनी चाहिए यानी आपके पास एक अच्छा लेखन कौशल होना चाहिए। आपके पास अच्छी भाषा होनी चाहिए, लेकिन कुछ स्किल्स ऐसी हैं जो तीनों प्लेटफॉर्म के लिए जरूरी है। जैसे भाषा होना तीनों प्लेटफॉर्म के लिए जरूरी है। खेल की जानकारी होना तीनों प्लेटफॉर्म के लिए जरूरी है। अगर आप खेल की जानकारी नहीं रखते हैं तो आप लोगों को नहीं बता पाएंगे। खेल के लिए पैशन होना एक तरह से नंबर एक क्वालिटी है। अगर आप में पैशन नहीं है। ऐसे में अगर आप स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट बन भी जाएंगे तो आप अपनी रिपोर्ट से अपने लेखन से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अपनी कमेंटरी या एना. लिसिस से या डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लोगों को अपने साथ जोड़ नहीं पाएंगे, क्योंकि जो खेल है उसमें पैशन बहुत महत्वपूर्ण है। चाहे वह पैशन के साथ खेलने वाला खिलाड़ी हो। स्पोर्ट्स में पैशन होना स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट की पहली क्वालिटी है। उसके बाद प्लेटफॉर्म के हिसाब से उसे भाषा आनी चाहिए। उसे स्पोर्ट्स का इतिहास पता होना चाहिए। एक चीज जो मैंने आज कल के बच्चों में देखी है कि उन्होंने पढ़ना कम कर दिया है। मैं जब भी कहीं जाता हूं। किसी भी कॉलेज में किसी भी इंस्टिट्यूट में जाता हूं तो सबसे पहला मेरा सवाल होता है बच्चों से कि क्या आप अखबार पढ़ते हैं। मेरे सवाल पर 99 प्रतिशत बच्चे कहते हैं कि नहीं। हम अखबार नहीं पढ़ते हैं। हम मोबाइल पर ही न्यूज देख लेते हैं, लेकिन मैं यह बात स्पष्ट कर देता हूं कि जो आप मोबाइल पर पढ़ रहे हैं वह असल में पढ़ना नहीं है। आप सिर्फ अपने आप को एक जानकारी दे रहे हैं। जिसे स्पोर्ट्स का पैशन है वह कभी भी अखबार फ्रंट पेज से नहीं खोलेगा। वह हमेशा पीछे से खोलेगा। मैं कह सकता हूं अपने बारे में कि पिछले चालीस साल से अखबार का फ्रंट पेज देखा ही नहीं। मैं हमेशा पीछे से ही खोलता हूं, क्योंकि मैं पहले स्पोर्ट्स का पेज पढ़ता हूं। देखता हूं कि क्या हुआ, बहुत सारी चीजें ऐसी हैं जो आप ट्रैक कर रहे हो। जिसके बारे में आपको पता है कि क्या हुआ। अगर आप आईपीएल फॉलो कर रहे हो तो आपको पता है। आप मैच सुन रहे हो या देख रहे हो लेकिन इसके अलावा भी बहुत कुछ हो रहा है स्पोर्ट्स में। आप उसके बारे में भी जानकारी चाहते हो तो आप स्पोर्ट्स का पेज पढ़ते हो। यह बहुत जरूरी है कि आप पढ़ें।

आप आत्मकथाएं पढ़ें। आप स्पोर्ट्स के बारे में किताबें पढ़ें, क्योंकि सिर्फ जानकारी होना खेल की जरूरत नहीं है। जैसे मैं आपको एक उदाहरण देता हूं कि कमेंटेटर जो हैं वह मान लीजिए टेस्ट मैच के ऊपर कमेंटरी कर रहा है और वह टेस्ट मैच जो है, वो बहुत रोचक स्थिति में है। ऐसा लग रहा है कि यह पता नहीं कि टीम ए जीतेगी या टीम बी जीतेगी। कहीं टाई न हो जाए। अब अगर उस कमेंटेटर को पता है कि आज तक टेस्ट मैच में कौन से मैच टाई हुए हैं। आपके पास जानकार आदमी बैठा है, जो आपको जानकारी दे सकता है। वह बताएगा कि 1978 में फला फला मैच टाई हुए थे। लेकिन अगर आपने इतिहास पढ़ा है, अगर आप स्पोर्ट्स से जुड़े हुए हैं तो आप जब भी कमेंटरी करेंगे, आप कोई न कोई प्रसंग ले आएंगे। आप लोगों को बताएंगे तो कमेंटरी रोचक हो जाएगी। मैंने जब कमेंटरी करनी शुरू की थी तो रवि शास्त्री साहब मुझे मिले। मैंने उनसे पूछा कि सर आप इतने अच्छे कमेंटेटर हैं तो एक अच्छा कमेंटेटर होने की सबसे जरूरी आदतें क्या हैं। उन्होंने कहा कीप द लिसनर इंटरेस्टेड। एक कमेंटेटर को सिर्फ और सिर्फ इतना ही इंश्योर करना है कि वह अपने लिसनर को इंटरेस्टेड रखे। यह प्रिंट जर्नलिस्ट के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है कि वह अपने पाठक को अपनी भाषा से जोड़े रखे। चटकदार भाषा रखे या गंभीर भाषा रखे। यह आपको देखना है कि आप क्या टार्गेट ऑडिएंस लेकर चल रहे हैं। पेपर की टार्गेट ऑडिएंस क्या है, आपके चैनल की टार्गेट ऑडिएंस क्या है, आपके डिजिटल प्लेटफॉर्म की टार्गेट ऑडिएंस क्या है। उसके हिसाब से आप अपनी भाषा का चयन करते हैं। उसके हिसाब से आप अपने पूरे लेख को बनाते हैं या अपनी पूरी रिपोर्ट को बनाते हैं। यह सब चीजें जो हैं एक स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट को जानना जरूरी है कि उसकी टार्गेट ऑडिएंस क्या है। उसकी भाषा कैसी होनी चाहिए।

प्रिंट की भाषा अलग होती है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भाषा अलग होती है। प्रिंट में पढ़ने वाले के पास यह सुविधा होती है कि वह अगर समझ नहीं पाए तो वापस जाए और दुबारा पढ़े। लेकिन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में या डिजिटल प्लेटफॉर्म में जो एक बार बोल दिया वह वापस नहीं आ सकता है। इसलिए वह भाषा ज्यादा सरल होनी चाहिए। बहुत क्लिष्ट भाषा नहीं होनी चाहिए। जैसा मैंने अभी कहा क्लिष्ट, अब हो सकता है सुनने वाले को समझ न आए तो मुझे क्या बोलना चाहिए था कि मुश्किल भाषा न हो। मुश्किल शब्द हर कोई जानता है इसलिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में या डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आप बोल रहे हैं तो यह जरूरी है कि आपकी भाषा सरल हो। जिसको हर कोई समझ सके। अगर आप अंग्रेजी में भी कर रहे हैं तो आपकी अंग्रेजी भले ही तेज हो, आपकी अंग्रेजी अलंकृत हो, लेकिन ऐसी हो जिसको हर कोई समझ सके। भाषा का बहुत बड़ा योगदान है तो यह स्किल होना बहुत जरूरी है। पढ़ना बहुत जरूरी है। उसके बाद आप इलेक्ट्रॉनिक मीडिया या डिजिटल प्लेटफॉर्म के स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट हैं, उसमें भी बहुत सारी चीजें है। जैसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में आप वहां पर स्क्रिप्ट लिख सकते है। आप वहां पर विश्लेषक हो सकते हैं। आप प्रेजेंटर हो सकते हैं। आप एंकर हो सकते हैं। आप प्रोड्यूसर हो सकते हैं। आप कैमरामैन हो सकते हैं। आप कमेंटेटर हो सकते हैं। बहुत सारे ऑप्शन हैं आपके पास, अगर आप स्पोर्ट्स में जुड़ना चाहते हैं। मैं कैमरामैन को नहीं कहूंगा कि वह स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट है, लेकिन जो स्क्रिप्ट लिख रहा है वह. स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट है। जो प्रेजेंटर है, एंकर है कमेंटेटर है, प्रोड्यूसर है और अगर आप प्रोड्यूसर भी बनना चाहते हैं तो आपको खेल की जानकारी होनी चाहिए। प्रोड्यूसर को एक चीज हमेशा याद रखनी चाहिए कि प्रोड्यूसर जहाज का कप्तान है। वह निर्धारित करेगा कि जहाज किस स्पीड से किस गंतव्य पर पहुंचेगा। प्रोड्यूसर को पता होना चाहिए कि जो कार्यक्रम बना रहे हैं उसका लक्ष्य क्या है।

आज के समय में नए सॉफ्टवेयर आ रहे हैं, उनकी जानकारी होना कितना जरूरी है?

जब आप कमेंटरी कर रहे होते हैं किसी लाइव मैच की तो उस समय आपका दिमाग ऑटोनोमस मोड पर चल रहा होता है। तब आप किसी भी गतिविधि या मोमेंट के लिए शब्द ढूंढकर नहीं लाते। यह आपके दिमाग की सोच से ही तुरंत आना चाहिए। आपने पूछा विश्लेषण का तो जो भी स्टेट या ग्राफ शो हो रहा है, स्क्रीन पर उसके बारे में पता होना जरूरी है। उसमें क्या क्या दर्शाया गया, कैसे बनाया गया। उन नए सॉफ्टवेयर के बारे में भी पता होना जरूरी है। इसका अभ्यास होना जरूरी है। स्क्रीन पर जो भी स्टेटिस्टिक्स आ रही है उनको किस तरह से इस्तेमाल करना है और उनका क्या मतलब है। इसके अलावा आपका फोकस जरूरी है, क्योंकि कई सारी चीजें एक साथ चल रही होती हैं। उन चीजों को सही से पूरा करने के लिए आपकी एकाग्रता होनी चाहिए। यह ध्यान रखिए कि जब आप वहां हैं तो आप वही हैं। इसलिए सॉफ्टवेयर की जानकारी होना, कैमरा एंगल की जानकारी होना, स्टूडियो की जानकारी होना, माइक्रोफोन में कैसे बोलना है, यह सब तकनीकी जानकारी होना जरूरी है।

इस फील्ड में अवसरों की बात करें तो लीग क्रिकेट ने काफी अवसरों को बढ़ाया है। कमेंटेटर और विश्लेषक होने के नाते इस बारे में कुछ बताइए?

जब से यह क्रिकेट लीग शुरू हुई है, टी टवेन्टी की तो सबसे बड़ी बात यह है कि ज्यादा देश इसमें शामिल हो गए हैं। यह छोटे फॉर्मेट का क्रिकेट है। इसमें अवसर बढ़े हैं। एक स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट, एक कमेंटेटर और एक एंकर के तौर पर, लेकिन इसके अलावा भी बहुत अवसर बढ़े हैं। वहां पर आपको स्पोर्ट्स के स्पेशलिस्ट भी चाहिए। क्रिकेट के स्पेशलिस्ट चाहिए। क्रिकेट के कोच चाहिए। पिच के स्पेशलिस्ट चाहिए। अब आप पर है कि आप किस अवसर को लपकते हैं।



खेल पत्रकार *संजय अग्रवाल* पिछले दिनों राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। इस दौरान *शिवांश सक्सेना* ने खेल पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं पर उनसे बातचीत की। उसी बातचीत के कुछ अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए यहां पेश हैं...





राम लाल आनंद महाविद्यालय की समितियों के वार्षिक उत्सव में कई अतिथियों ने हिस्सा लिया (दाएं) और अतिथियों को सुनने के लिए बड़ी संख्या में महाविद्यालय के शिक्षक और विद्यार्थी जुटे (बाएं)।

मुसीबतें हमें सिखाने के लिए आती हैं:मेजर डीपी सिंह

खुशी शाक्या/श्वेता सिंह

नई दिल्ली। संविधान केवल अधिकार नहीं कर्तव्यों की भी बात करता है। बाबा साहब सिर्फ दलित नेता नहीं बल्कि राष्ट्र नेता भी थे। उनको सिर्फ दलितों का नेता कहना उनका अपमान करना है। अंबेडकर साहब सवाल करना भी सिखाते हैं और जवाब ढूंढना भी। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय में आयोजित हौसला 24 में डॉ. विजेंद्र कुमार चौहान ने कही।

फुले–पेरियार–अंबेडकर, गांधी स्टडी सर्किल और इक्वल अपॉर्चुनिटी सेल ने अपने वार्षिक उत्सव हौसला 24 के पहले दिन 18 अप्रैल को मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. विजेंद्र कुमार चौहान, प्रो. प्रमोद मेहरा और डॉ. राजकुमार फलवारिया को आमंत्रित किया था। डॉ. विजेंद्र चौहान अपने बेबाक वक्तव्य और काम के लिए जाने जाते हैं। इसी कारण उन्हें सुनने के लिए विद्यार्थी बड़ी संख्या में इकट्ठा हुए। डॉ विजेंद्र चौहान ने वार्षिक उत्सव का नाम 'हौसला' रखने की सराहना की और लोगों को आगे बढ़ने का हौसला दिया। उन्होंने संविधान को सबसे खूबसूरत किताब बताया, जो हमारी आकांक्षाओं को दर्शाता है।

डॉ. राजकुमार फलवारिया ने भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष को बताते हुए फुले, पेरियार व अंबेडकर की भूमिका को बताया। प्रो. प्रमोद मेहरा ने एक बात से ही सबका दिल छू लिया कि 'देयर इज ऑलवेज ए चॉइस' हमारे पास सदैव एक विकल्प रहता है। इसलिए हमें कभी उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए और कर्म करते रहना चाहिए।

हौसला के दूसरे दिन 19 अप्रैल को

● हर व्यक्ति एक किताब होता है...मैं उन्हें पढ़ता हूं : डॉ. विजेंद्र कुमार चौहान

● जो रहे प्रसन्न, समझो सही मायनो में वही है सर्व गुण संपन्न

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मेजर डीपी सिंह आमंत्रित थे। डॉ. मेजर डीपी सिंह ने कहा कि संघर्ष और आत्मविश्वास से अपने जीवन की बड़ी–बड़ी मुसीबतों से हम लड़े। दुश्मनों से लड़ते–लड़ते अपना एक पैर गंवा दिया। फिर भी हार नहीं मानी और देश के पहले ब्लेड रनर का खिताब जीता। सोलो स्काई ड्राइ. विंग करने वाले एशिया के पहले दिव्यांग बने। मुसीबतें हमें बढ़ाने और सिखाने के लिए आती हैं। मुसीबतें आ रही हैं क्योंकि हममें अभी थोड़ी कमियां हैं। हम जब मुसीबत से बाहर निकलते हैं तो उस स्थान पर पहुंचते हैं जहां हमको कोई उपलब्धि मिलने वाली होती है। मेजर डीपी सिंह अपनी युवा उम्र के संघर्ष का जिक्र करते हुए कहा कि परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। उसके हिसाब से स्वयं को ढालना पड़ता है।

हौसला में कई प्रतियोगिताओं को आयोजित किया गया, जिसमें ओपन माइक, रचनात्मक लेखन, वाद विवाद, पोस्टर मेकिंग, टैलेंट हंट और क्विज प्रतियोगिता और पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई। ओपन माइक प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार रितिकेश सिन्हा, द्वितीय पुरस्कार किशन कुमार और तृतीय पुरस्कार ऋषि राज को मिला।

राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने रुचि दिखाई। इसमें ट्राइबल लाइफ इन इंडिया, अम्बेडकर, भगत सिंह, हमारा संविधान जैसी किताबें भी खरीदी। वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने विषय के पक्ष और विपक्ष में तर्क प्रस्तुत किए। इसमें प्रथम स्थान महक मौर्या और लक्षिता पांडे, द्वितीय स्थान तनुश्री जोशी और मयंक भारती और तृतीय स्थान आलोक राज और आस्था त्रिपाठी को मिला। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता मे पहला स्थान आकाश मौर्या, द्वितीय स्थान मोहित और तृतीय स्थान पर मो. शाहफरमान रहे।

टैलेंट हंट प्रतियोगिता दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गई, जिसमें प्रथम स्थान तपेश निगम, द्वितीय स्थान बजरंग बली और तृतीय स्थान गौरव कुमार ने प्राप्त किया। क्विज प्रतियोगिता मे प्रथम पुरस्कार प्रियांशु, द्वितीय स्थान पर विपिन और प्रिंस कुमार और तृतीय पुरस्कार आलोक राज को मिला।

प्रकृति संरक्षण को बढ़ावा दिया गया

लक्ष्मी

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की स्टेटक्राफ्ट समिति ने 29 अप्रैल को पॉलिस्फेयर कार्यक्रम का आयोजन किया। व्याख्यान की शुरआत डॉ. उत्तम कुमार सिन्हा ने की, जिसका विषय क्लाइमेट नेक्सस: वाटर, फूड एंड एनर्जी था। उन्होंने विषय के विभिन्न पहलुओं से लोगों को परिचित कराया।

समारोह में कई प्रतियोगिताएं भी हुईं। आर्टिकल राइटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अनुज चौधरी, प्रणव खोसला ने दूसरा और आकांक्षा मिश्र ने तीसरा स्थान हासिल किया। क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान टीम विपिन ने प्राप्त किया। टीम प्रेरित ने दूसरा और तीसरा स्थान टीम सिद्धार्थ ने प्राप्त किया।

युवा संसद में पास महिला आरक्षण बिल

उत्कर्ष

नई दिल्ली। भारत के युवा विकास को महत्व देते हैं। विकसित भारत की परिकल्पना चौतरफा विकास से संभव है। यह बात आरके पुरम के पूर्व विधायक अनिल शर्मा ने राम लाल आनंद महाविद्यालय में आयोजित युवा संसद में 18 मार्च को कही। अनिल शर्मा राम लाल आनंद महाविद्यालय में 1989–92 के बैच के विद्यार्थी रह चुके हैं। एनएसएस, संगोष्ठी समिति और राष्ट्रीय युवा केन्द्र संगठन ने जिला स्तरीय युवा संसद का आयोजन किया।

आयोजन की शुरुआत में संसद की गरिमा को बनाए रखने के लिए शपथ दिलाई गई और भारत में हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन को याद किया गया। प्रश्नकाल की शुरुआत विपक्ष ने गृहमंत्री से प्रश्न करके की। इसके बाद कानून मंत्री के रूप में सक्षम ने महिला शक्ति वंदन अधिनियम को सदन में पेश किया। इस बिल पर विपक्ष की भ. ूमिका निभा रहे विद्यार्थियों ने सवाल किए।

इन्हीं सवाल जवाब के बीच बहुमत के साथ यह बिल पास हुआ। खुशी वशिष्ठ को सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि के लिए चुना गया। अभिनव पांडे को भी प्रथम स्थान मिला। क्विज प्रतियोगिता भी हुई। सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। अंत में समिति के संयोजक प्रो. मेजर संजय कुमार शर्मा ने सभी का आभार जताया और विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। सभा में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अनुराग शर्मा सहित कई शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

ज्ञान का इस्तेमाल करना आना चाहिए

हर्षित गोयल

नई दिल्ली। अगर आपको बोलना आता है तो यह अच्छी बात है, लेकिन अगर आपको यह पता है कि आपको क्या बोलना है तो और भी अच्छी बात है। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय में 4 मार्च को धर्मग्रंथों से जीवन शिक्षा विषय पर बोलते हुए कुमार गिरीश ने कही। अभिव्यक्ति समिति के विमर्श की दूसरी कड़ी के रूप में आयोजित कार्यशाला में मुख्य वक्ता कुमार गिरीश ने ज्ञान को सब्जेक्टिव बताया और बुद्धि को ऑब्जेक्टिव।

उन्होंने कहा कि व्यक्ति को पता होना चाहिए कि अपने ज्ञान का कहां इस्तेमाल करना है। जब बेटा आपकी सारी संपत्ति को नुकसान पहुंचा दे तो उसे बेदखल कर देना गलत नहीं



कुमार गिरीश

● आरएलए में धर्मग्रंथों से जीवन शिक्षा विषय पर व्याख्यान

● धर्मग्रंथों में अपने काम वाली चीजें जरूर पढ़ना चाहिए

है। इसके अलावा व्यक्ति का सोचना बहुत जरूरी है, क्योंकि जानवरों और मनुष्य में केवल बुद्धि का ही फर्क है। अगर कोई व्यक्ति आपको कुछ भी सोचने के लिए मना करता है तो आपको उसका तुरंत त्याग कर देना चाहिए। रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों को क्यों पढ़ना चाहिए और क्या यह सब सच में हुआ था। इसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि बात होने या न होने की नहीं है। अगर ग्रंथ में मेरे या आपके कुछ भी काम का है तो उसे जरूर पढ़ना चाहिए। कुमार गिरीश ने कहा कि व्यक्ति जब यह सोचना छोड़ देता है कि मैं महान कब बनूंगा तब से उसके महान बनने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। कुमार गिरीश ने विद्यार्थियों को लेखक रामधारी सिंह दिनकर की 'रश्मिरथी' काव्य की कुछ पंक्तियां भी सुनाई। कार्यशाला में समिति संयोजक डॉ. मानवेशनाथ दास, डॉ. सुरेन्द्र कुमार समिति अध्यक्ष अविशि खुराना सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद थे।

आईपीएल की तर्ज पर कॉमर्स सोसाइटी का फ्रेंचाइजी फोरम

विशाल यादव

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) भारत में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली पुरुषों की टी–20 क्रिकेट लीग है। 2007 में बीसीसीआई की ओर से स्थापित लीग में 10 शहर आधारित फ्रेंचाइजी टीमें शामिल हैं। इसकी तर्ज पर ही राम लाल आनंद महाविद्यालय की कॅचिंग द कॉमर्स सोसायटी ने 3 अप्रैल को ''फ्रेंचाइज फोरम'' नामक कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें दो प्रकार की प्रतियोगिताएं आईपीएल ऑक्शन तथा जर्सी डिजाइनिंग शामिल थीं।

इस कार्यक्रम में 10 टीम भाग ले रही थीं, जिन्हें आईपीएल ऑक्शन की तर्ज पर ही सबसे ऊंची बोली लगाकर एक टीम को खरीदना था। इसमें सीएसके 22 करोड़ में टीम 1 साथ आरसीबी 26 करोड़ में टीम 2 के साथ गई। इसके पश्चात सभी टीमों को एक निर्धारित राशि दी गई, जिस राशि से उन्हें खिलाड़ी खरीद कर अपनी टीम पूरी करनी थी। खिलाड़ियों की नीलामी में कुल पांच राउंड हुए। इसमें सबसे पहले महान खिलाड़ी जो क्रिकेट जगत से संन्यास ले चुके हैं उन्हें शामिल किया गया स फिर बैट्समैन, बॉलर, ऑल राउंडर और विकेटकीपर की बोली सभी टीमों ने लगाई। सभी टीमों ने अपनी 12 खिलाड़ी की टीम को पूरा किया, जो टीम खिलाड़ी पूर्ण नहीं कर पाई, वह प्रतियोगिता से बाहर हो गई।

रुचियों की खोज कभी बंद न करें विद्यार्थी : विश्वनाथ

स्नेहा अग्रवाल

नई दिल्ली। अपनी रुचियों की खोज करना कभी बंद न करें। उसका लगातार विस्तार करें। नए–नए तरीके लगातार ईजाद करें। यह बात आईएएस अधिकारी डॉ. विश्वनाथ कुमार ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कही। राम लाल आनंद महाविद्यालय के सांख्यिकी विभाग ने वार्षिकोत्सव पैनेसिया का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन से हुई, जिसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र रहे आईएएस अधिकारी डॉ. विश्वनाथ कुमार ने एआई में सांख्यिकी के कैरियर की संभावनाएं और उपयोग विषय पर अपनी बात रखी। उन्हा. ने सांख्यिकी की भूमिका को कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग की रीढ़ के रूप में महत्व दिया, सांख्यिकी के विद्यार्थियों को इन क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए मूल बातों पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी।

उन्होंने कॉर्पोरेट, सरकारी और शिक्षण क्षेत्रों में विभिन्न नौकरी के अवसरों के बारे में विस्तार से बताया। वक्ता सत्र के बाद कार्यक्रम 'सांख्यिकी ट्राइफेक्टा' के साथ जारी रहा, जिसमें तीन राउंड वाली प्रश्नोत्तरी प्रतियो. गिता थी। एक पहेली राउंड, एक सामान्य प्रश्नोत्तरी राउंड और एक बजर राउंड था।

इस प्रतियोगिता को आरएलए के विद्यार्थी पीयूष और दिव्यांशु ने जीता। धीरज, सार्थक और लक्ष्य की टीम दूसरे स्थान पर रही। इसके साथ ही 'डेटामेज', एक डेटा प्रस्तुति स्पर्धा हुई, जिसमें विद्यार्थियों को पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन में विश्लेषण और प्रस्तुत करने के लिए डेटा के दो सेट दिए गए। 'डेटामेज' में टीम एनवाईडी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। टीम जेटीआई दूसरे स्थान पर रही। विज्ञापन प्रतियोगिता 'एड मेनिया' और वाद–विवाद प्रतियोगिता 'वर्डवार' में बदल गया। एड मेनिया में विद्यार्थियों को ऋतिक रोशन की छठी उंगली और



नॉन–स्टिक गोंद जैसे गैर–उपयोगी उत्पादों का विपणन करने की चुनौती दी गई, जबकि टाइम मशीन और डोरेमोन के कहीं भी जाने वाले दरवाजे जैसे उपयोगी उत्पादों का विपणन न करने की चुनौती दी गई। एड मेनिया में प्रथम पुरस्कार टीम गीली छिपकली को मिला। टीम सूखा केकड़ा दूसरे स्थान पर रही।

पक्ष और विपक्ष में तर्क प्रस्तुत करना थास उसके बाद निष्कर्ष निकालना था। इस प्रतियोगता में टीम कमला नेहरू ने बाजी मारी। टीम आरएलए रनरअप रही। अंतिम कार्यक्रम एक खजाने की खोज थी, जहां टीमों ने चार रास्तों का अनुसरण किया, जिनमें से प्रत्येक में पांच सुराग थे। सभी रास्ते एक ही अंतिम गंतव्य की ओर ले गए। इसमें टीम ए स्क्वायर विजेता रही। टीम बीकॉम रनरअप रही।



राम लाल आनंद महाविद्यालय की ईसेल समिति की ओर से आयोजित समिट में अपना स्टार्टअप शुरू करने वाले युवाओं ने हिस्सा लिया।

आरएलए में लगा युवा उद्यमियों का मेला

जया सिंह

नई दिल्ली। जिंदगी जीने के दो तरीके होते हैं या तो जो हो रहा है होने दो या फिर जिम्मेदारी लो बदलने की। यह बात 4 अप्रैल को राम लाल आनंद महाविद्यालय के एम्फी थिएटर में हुए कार्यक्रम ई–समिट 24 फ्रॉम आइडिया टू इनोवेशन को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता बीइंग चीफ के संस्थापक और सीईओ शुभम माहेश्वरी ने कही। सेल समिति ने दो दिवसीय ई समिट 24 का आयोजन किया गया। इस आयोजन में पैनल टॉक, स्टार्टअप कॉन्क्लेव एवं कई प्रतियोगिताएं हुईं। समिट में सीईओ राहुल लखमानी, डीबीएमसीआई के सीईओ नचिकेत भाटिया, बीइंग शेफ के संस्थापक शुभम माहेश्वरी, ब्लू टी के सह संस्थापक नितेश सिंह, बाका बुक्की के संस्थापक नटवर अग्रवाल, स्वेंकलस के सह संस्थापक निश्चल शर्मा ने विद्यार्थियों को स्टार्टअप के बारे में बताया। शुभम माहेश्वरी ने स्टार्टअप से जुड़ी जानकारी को विद्यार्थियों से साझा किया। साथ ही उन्होंने अपने खुद का व्यापार शुरू करने का विचार रखने वाले विद्यार्थियों को अटल इनोवेशन मिशन के बारे में बताया।

आप क्या सोचते हैं, वह आपके लिए सबसे जरूरी है। यह वाक्य मुख्य अतिथि नितेश सिंह ने कहा। इन्होंने अपनी सरकारी नौकरी छोड़कर एक स्टार्टअप शुरू किया और ब्लू टी ब्रांड की स्थापना की। इस ब्लू टी को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य था, ग्रीन टी को हटाना और ब्लू टी को विश्व भर में प्रसिद्धि हासिल करवाना। नटवर अग्रवाल ने सीए की नौकरी छोड़कर अपना खुद का बिजनेस शुरू किया। इन्होंने जूते का बिजनेस शुरू किया और अपनी एक ब्रांड बनाई बांका बुक। वक्ता ने यह भी बताया कि जब आप किसी वस्तु का बिजनेस करना चाहते हैं तो आप यह न सोचें कि इसका बिजनेस पहले ही कोई कर रहा है बल्कि यह सोचें कि आप उस वस्तु का बिजनेस अपने तरीके से कैसे कर सकते हैं।

निश्चल शर्मा ने बताया कि मैं यह काम इसलिए कर पा रहा हूं क्योंकि मैं सिर्फ सोच नहीं रहा कि मुझे करना है बल्कि मैं उसको पूरी निष्ठा के साथ कर रहा हूं। यदि आपके मन में कोई विचार है तो उसको मन में न रखकर उस पर काम करो। ई–सेल की तनिष्का अग्रवाल ने पैन. लिस्ट का साक्षात्कार लिया।

समिट के आखिरी दिन विद्यार्थियों को अपने स्टार्टअप की प्रदर्शनी दिखाने का मौका था। महाविद्यालय परिसर में स्टार्टअप कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया। इसमें हर तरह के विद्यार्थियों की ओर से संचालित स्टार्टअप्स को जगह दी गई। विद्यार्थियों को यहां पर जज तथा अध्यापकों के सामने अपने उद्योग की प्रस्तुति करना था। कार्यक्रम में जज के रूप में मौजूद थे राहुल लखमानी और शीतल कक्कड़। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने स्टार्टअप में शामिल टीमों से बातचीत की। समिति संयोजक प्रो. सीमा गुप्ता ने सभी का आभार जताया।

दृश्यम की कार्यशाला में फोटोग्राफी के टिप्स दिए

फोटो एडिट कैसे करें, यह करके दिखाया गया

शिवम

- **दृश्यम और फोटोग्राफी क्लब ने कार्यशाला का आयोजन कराया**
- **विद्यार्थियों को फोटोग्राफी के लिए आवश्यक उपकरणों से परिचय कराया**

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में दृश्यम फिल्म और फोटोग्राफी क्लब ने फोटोग्राफी कार्यशाला का आयोजन किया। मुख्य वक्ता देवेंद्र मीणा को डॉ मानवेश नाथ दास और समिति की अध्यक्ष वंशिका ओझा ने पौधा देकर सम्मानित किया।

इसके बाद मुख्य वक्ता देवेंद्र मीणा ने लैंडस्केप फोटोग्राफी के बारे में बताया, जिसमें उन्होंने पहले अपनी कुछ खुद की खींची हुई तस्वीर दिखाई और पूछा कि यह फोटो कहां की है? इसके बाद उन्होंने फोटोग्राफी के जरूरी मूल्यों के बारे में विस्तार से बताया। जैसे कि आईएसओ क्या होता है? शटर स्पीड क्या होती है? अपार्चर क्या होता है? एक्सपोजर क्या होता है?

इसके बाद देवेंद्र मीणा ने बताया कि जब हम अपार्चर, शटर स्पीड, एक्स्पा. `जर तीनों का इस्तेमाल करते हैं तो उसे एक्स्पोजर ट्रायंगल कहा जाता है। इसके बाद उन्होंने हिस्टोग्राम के बारे में बताया कि हिस्टोग्राम होता क्या है और उसका इस्तेमाल क्या होता है? उन्होंने इस बारे में बताया कि हिस्टोग्राम कैमरा के अंदर एक तरह का ग्राफ बना होता है। जब हमें फोटो में डिटेल चाहिए होती है तो हिस्टोग्राम का इस्तेमाल किया जाता है। ग्राफ जितना बीच में होता है, तस्वीर उतनी ही अच्छी आती है। इसके बाद देवेन्द्र मीणा ने कैमरा मोड्स, कैमरा सेटिंग, फॉक्स मोड, मीटरिंग मोड, आइसो, शटर स्पीड, अपार्चर सहित अनेक बिन्दुओं के बारे में बताया।

उसके बाद उन्होंने फोटोग्राफी के बारे में बताया कि जब हम कहीं तस्वीर खींचने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं तो हमें क्या–क्या सामान रखना चाहिए। इसके बाद देवेन्द्र मीणा ने किसी तस्वीर को लाइटरूम एप की मदद से एडिट करना सिखाया। अंत में समिति के संयोजक डॉ. मानवेश नाथ दास ने देवेंद्र मीणा और विद्यार्थियों को जुड़ने के लिए आभार व्यक्त किया।

महापुरुषों के योगदान को याद करना चाहिए:चेयरमैन

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली। आज कुछ ही महापुरुषों के नाम लिए जाते हैं। वे हमारे लाइट हाउस हैं, लेकिन कुछ लोग उनका पूरा नाम नहीं लेते, लिखते भी नहीं हैं। बाजार की तरह उनके नाम का उपयोग कर रहे हैं। देश भक्ति व्यक्त करने की चीज नहीं है। जीवन में किसने कितना किया। किन परिस्थितियों में किया। समाज ने कितना सहयोग किया, इसलिए हम ऐसे महापुरुषों को स्मरण करते हैं। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय में मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन संतोष कुमार तनेजा ने कही।

डॉ. भीमराव अंबेडकर की 133वीं जयंती के उपलक्ष्य में 16 अप्रैल को आयोजित कार्यक्रम में संतोष कुमार तनेजा ने कहा कि देश का दुर्भाग्य है कि हर महत्त्वपूर्ण बात को हल्के में ले लिया जाता है। 'डॉ. भीमराव अंबेडकर और राष्ट्रीय पहचान की पुनः संकल्पना' विषय पर व्याख्यान देते हुए पीजीडीएवी कॉलेज के प्रो. महेश कुमार बैरवा ने कहा कि बाबा साहेब को जब लोग पढ़ते हैं। सुनते हैं। तब राष्ट्रवाद छूट जाता है। केवल दलित मसीहा के तौर पर उन्हें देखते हैं। ऐसे में उनको पहले बाबा साहेब की किताबों को पढ़ना चाहिए। उसके बाद उनके ऊपर लिखी किताबों को पढ़ना चाहिए।

इससे पहले प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बाबा साहब का देश और समाज के लिए किए गए योगदान को रेखांकित किया। अंत में आरएलए मीडिया मंथन की संयोजिका प्रेरणा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस मौके पर कविंद्र तालियान, डॉ. विजय भाटिया, डॉ. दीपक सेतिया, डॉ. सीमा भारती समेत कई शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री संग्रहालय का शैक्षणिक दौरा

योगेश प्रताप

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में 16 अप्रैल को सोशल एंड इमोशनल लर्निंग (वीएसी) के छात्रों के लिए एक शैक्षणिक यात्रा का आयोजन किया गया। दौरे के लिए प्रधानमंत्री संग्रहालय का चयन किया गया। शैक्षिक भ्रमण का नेतृत्व डॉ. कीर्ति पुनिया ने किया।

इस शैक्षणिक भ्रमण में छात्रों को अलग–अलग समय के प्रधानमंत्रियों के बारे में विस्तार से जानकारी मिली। देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई, राजीव गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी से जुड़ी बातें भी बताई गईं। प्रधानमंत्री कार्यालय, कक्ष, मीटिंग हॉल को डेमो के तौर पर प्रदर्शित किया गया। छात्रों को पिछले 75 वर्षों में देश में हुए छोटे–बड़े आंदोलनों, संधियों, योजनाओं और युद्धों के बारे में भी जानकारी मिली। प्रधानमंत्रियों को मिले उपहारों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

आप ठान लें तो कुछ भी कर सकते हैं

जया सिंह



- **राम लाल आनंद कॉलेज के चेयरमैन संतोष तनेजा ने तैयारी के टिप्स दिए**
- **बीए प्रोग्राम की समिति सेरेनिटी ने आयोजित किया वार्षिक उत्सव**

नई दिल्ली। हर व्यक्ति को अपने तरीके से जीवन जीने और उसे सा. र्थक बनाने का अधिकार है। एक बार आप ठान लें तो आप कुछ भी कर सकते हैं। यूपीएससी से कठिन परीक्षा कोई नहीं है। लक्ष्य पर पहुंचने के लिए आप कितनी मेहनत कर रहे हैं, यह तय करेगा कि आप लक्ष्य तक पहुंचेंगे या नहीं। यह बातें राम लाल आनंद महाविद्यालय की बीए प्रोग्राम की समिति सेरेनिटी की ओर से आयोजित वार्षिक उत्सव में मुख्य अतिथि संतोष कुमार तनेजा ने कहीं। उत्सव के तहत अलग–अलग प्रतियो. गिताएं भी कराई गईं।

महाविद्यालय की गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन और संकल्प आईएएस के कर्ता–धर्ता संतोष कुमार तनेजा मुख्य वक्ता के रूप में समारोह में उपस्थित थे। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता भी मौजूद थे। संकल्प संस्था के साथ काम करने वाली मिस रमनदीप कौर ने संस्था के तहत चलाई जा रही यूपीएससी आधारित कक्षाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों को कब से कक्षाएं शुरू करना चाहिए और क्या तरीका अपनाना चाहिए।

सारंग 24 के नाम से आयोजित उत्सव में क्विज प्रतियोगिता भी कराई गई, जिसका विषय महिला सशक्तिकरण आधुनिकीकरण तथा ज्वलंत मुद्दों पर आधारित था। इसके प्रथम विजेता ईशान और शिवम रहे। दूसरे विजेता समीर और प्रतीक रहे। तीसरे विजेता थे अरविंद और योगेश। इसी कड़ी में महाविद्यालय परिसर में एक ओपन माइक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों को अपनी कला दिखाने का अवसर दिया गया।

इस प्रतियोगिता की प्रथम विजेता हिंदी पत्रकारिता की शांभवी रहीं। दूसरे विजेता रहे हिंदी विशेष के राजकुमार और तीसरे विजेता रहे इतिहास विशेष के युद्धवीर। एक ट्रेजर हंट प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इस प्रतियोगिता में अलग–अलग टीमों में प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। अंत में समिति की संयोजक डॉ. सुनैना शर्मा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

आदिवासियों के बीच जाकर पत्रकारिता करें विद्यार्थी: शशि

हर्षित गोयल

नई दिल्ली। हिंदी विभाग की हिंदी साहित्य परिषद अपना वार्षिकोत्सव 'साहित्य सागर' 12 अप्रैल को मनाया। पहले दिन कार्यक्रम में दो प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिसमें स्वरचित काव्यपाठ और हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉ. कीर्ति पुनिया, डॉ. सुरेंद्र कुमार, डॉ. रोशन लाल मीणा , डॉ. मानवेश नाथ दास और डॉ. सीमा भारती शामिल थीं। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रश्नों की संख्या पचास थी और सभी प्रश्नों को हल करने की समय सीमा एक घंटा थी। प्रतियोगिता में प्रश्न हिंदी साहित्य से जुड़े थे।

साहित्य सागर के दूसरे दिन भारत के पहले फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ का साक्षात्कार लेने का अवसर प्राप्त करने वाले पत्रकार डॉ. श्याम सिंह 'शशि' महाविद्यालय में मुख्य अतिथि के रूप में आए थे। महाविद्यालय के एम्फीथिएटर में आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत एक डॉक्यूमेंट्री से हुई, जो शशि की उपलब्धियों पर केन्द्रित थी। पत्रकारिता विभाग के शिक्षक डॉ. प्रदीप कुमार की देख–रेख में बनी डॉक्यूमेंट्री में शशि अपने जीवन के कुछ अनुभव बताते हैं। मसलन–कैसे उन्होंने आदिवासियों के बीच जाकर पत्रकारिता की। रोमा संस्कृति क्या है। इसी के साथ उन्होंने विद्यार्थियों



से क्षेत्रीय पत्रकारिता के तहत आदिवासियों के बीच जाकर पत्रकारिता करने की सलाह दी।

शशि बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। वह पत्रकार के साथ एक कवि, मानव विज्ञानी और साहित्यकार भी हैं। इस योगदान के लिए इन्हें 1990 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। इसके अलावा इन्हें राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। आपने रोमा संस्कृति के लोगों पर लिखने के साथ ही 1971 में भारत पाकिस्तान युद्ध के समय में पत्रकारिता की है। शशि ने साहित्य के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया है। वह कई भाषाओं के ज्ञाता हैं। हिंदी साहित्य परिषद के कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और उप–प्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास, एनसीसी अधिकारी प्रो. (मेजर) संजय कुमार शर्मा के साथ–साथ परिषद की संयोजिका प्रो. श्रुति आनंद, विभाग की प्रभारी प्रो. अर्चना गौड़ सहित कई शिक्षक मौजूद रहे। अंत में हिंदी साहित्य परिषद ने वर्ष में अपनी सभी प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों को बताया। साथ ही पिछले दिनों हुई स्वरचित काव्य रचना और हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का परिणाम घोषित किया। यह पूरा कार्यक्रम हिंदी परिषद की संयोजिका प्रो. श्रुति आनंद के निर्देशन में संपन्न हुआ।

संरक्षक मंडल

प्राचार्य

प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष

प्रो. राकेश कुमार

परामर्शदाता

डॉ. अटल तिवारी

संपादक

दीपक कुमार

उप-संपादक

अनुराग